Music Journal
Volume 36
Page No. 78-84

***Vageeshwari** The World Classical Music e-Research Journal*
December 2022
ISSN 0975-7872

Copyright@2022 Author(s) retain the copyright of this article
Homepage : ejournal@mfa.du.ac.in
Publisher : Department of Music, Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi

No part of contents of this paper may be reproduced or transmitted in any form or by any means without the permission of Author

मेवाड़ के महान संगीत शास्त्री : पं. कृष्णानंद व्यास

प्रो. कौमुदी क्षीरसागर
संगीत विभाग, सीताबाई कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, अकोला
bardekaumudi@gmail.com

संकेत शब्द : मेवाड़, कृष्णानंद, गायन

सारांश : मेवाड के महान संगीत शास्त्री, वाग्गेयकार, एवम् उच्चकोटि के कलाकार रागसागर पं. कृष्णानंद व्यास के सांगीतिक योगदान की चर्चा इस शोधपत्र के माध्यम से करने का प्रयास किया जा रहा है। 18 वी शती की विकट राजनैतिक परिस्थितियों में संगीत पर अपना लक्ष्य केंद्रित कर बारह लाख दस हजार रचनाओं का संकलन करना किस कदर कठिन रहा होगा, इसकी कल्पना मोबाईल के जमाने में रहने वाले हम–आप जैसे लोगों के लिए करना असंभव है। इस शोधपत्र लेखन का उद्देश्य संगीत संशोधकों का ध्यान इस ओर ले जाते हुए संगीतराग–कल्पद्रुम में छिपी अनुसंधानों की असीमित संभावनाओं को प्रकाशित करना है। पं. कृष्णानंद व्यासदेव के अभूतपूर्व योगदान की चर्चा करने से भी आगे जा कर उनके द्वारा किये गए कार्य को संगीत संशोधन क्षेत्र में अधोरेखित करने का मेरा यह विनम्र प्रयास है।

संगीत के वे आचार्य जो गायन / वादन के साथ पदरचना (काव्य) में प्रवीण हों और उसे गेयत्व प्रदान करते हों, उन्हें वाग्गेयकार कहा जाता है। वाग्गेयकार का अर्थ है 'वाक् और गेय' अर्थात् जो वाक् (पद/काव्य) एवम् गेय का विशेषज्ञ हो । भारतीय संगीत में प्रयोगकुशल शास्त्रकारों की, वाग्गेयकारों की परंपरा भरत से मानी जाती है जिनमें मतंग, कीर्तिधर, कोहल, अश्वतर, आजनेय, अभिनवगुप्त, सोमेश्वर, शारंगदेव जैसे प्राचीन आचार्यों का योगदान महत्वपूर्ण है। 14 वी शती में मेवाड के महाराणा कुभंकर्ण ने इन आचार्यों की ही परंपरा को आगे ले जाते हुए अपने 'संगीतराज' नामक सोलह हजार श्लोकों वाले ग्रन्थ का प्रणयन किया है, जिसे 'षोडषसारत्र्यामसंगीतमीमांसायाम्' भी कहा गया है।

मेवाड के गुहिल राजवंश के महाप्रतापी शासक महाराणा कुंभा की उपाधियों–हिंदुसुरत्राण, टोडरमल, चापगुरु आदि से जहां उनके शौर्य का अंदाज लगाया जा सकता है, वहीं 'एकलिंग माहात्म्य' एवम् 'संगीतराज' के रचनाकर्ता के रुप में उनकी कलासक्ति एवं धर्मरक्षक के स्वरुप को भली भांति परखा जा सकता है।[1] मेवाड के महान वाग्गेयकार सरदारसिंह, जवानसिंह, महाराणा

Copyright@2022 Author(s) retain the copyright of this article
Homepage : ejournal@mfa.du.ac.in
Publisher : Department of Music, Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi

No part of contents of this paper may be reproduced or transmitted in any form or by any means without the permission of Author

कुंभा, मीराबाई आदि की ही परंपरा को अग्रप्रेषित करने वाले कृष्णानंद व्यास का योगदान संगीत क्षेत्र में अतुलनीय है। प्रस्तुत शोधपत्र में इसी पर चर्चा कर रागसागर कृष्णानंद व्यास के कर्तृत्व को अधोरेखित करने का विनम्र प्रयास किया जा रहा है।

मेवाड की वाग्गेयकार परंपरा के जाज्वल्यमान नक्षत्र के रुप में कृष्णानंद व्यासदेव का स्मरण किया जाता है। इन विलक्षण प्रतिभाशाली कृष्णानंदजी के जन्म के संबंध में कुछ मतभेद है, प्रभुदयाल मित्तल ने इसका जन्म 1851 वि. माना है।

तत्कालीन मेवाड मे देवगढ के पास कोट नामक स्थान पर गौडज्ञातीय ब्राह्मण परिवार में इनका जन्म हुआ। अमरानंद व्यास इनके पितामह थे तथा हीरकानंद, इनके पिता थे। कृष्णानंद व्यास की मृत्यु 94 वर्ष की अवस्था में, वि. 1945 में हुई।[2] इस दीर्घ जीवितावधि में वे 32 वर्ष पर्यन्त सम्पूर्ण भारत में भ्रमण करते रहे तथा अनेक राजसभाओं में उपस्थित होकर कलावन्तों तथा वाग्गेयकारों से संपर्क करते रहे । इस प्रकार प्रायः प्रत्येक घराने की सभी प्रकार की बंदिशों के संग्रह का कार्य वे करते रहे । कृष्णानंद जी द्वारा भरतपुर के महाराजा बलवंतसिंह जी को लिखे गये एक पत्र में उनके द्वारा 12 लाख 25 हजार बंदिशों का संग्रह करने की बात इस प्रकार लिखी गयी है ।

''तमाम मुल्क में फिर के 32 वर्ष ताई, संग्रह करे, द्वादश लक्ष पचीस सहस्त्र गान, नित्यप्रति आशीर्वाद करा दें।''[3]

32 वर्ष तक संकलन का कार्य करने के पश्चात् इस प्रकार एकत्रित की गयी सामग्री को उन्होंने 'संगीत–राग कल्पद्रुम' नामक ग्रन्थ में कई खण्डों में निबद्ध किया। इस ग्रन्थ के प्रकाशन का कार्य उन्होंने कलकत्ता में निवास करते हुए किया तथा तत्कालीन अनेक शासकों को ग्रन्थ की प्रतियां भेज कर उनसे दक्षिणा के रुप में सौ–सौ, दो–दो सौ रु. वे प्राप्त करते रहे।

जयपुराधीश सवाई रामसिंह बहादुर को कृष्णानन्द द्वारा इस संदर्भ में लिखे गये पत्र पोथीखाना संग्रह, जयपुर में, ग्रंथ संख्या–4806[4] के अन्तर्गत देखे जा सकते हैं। इस पत्र में उनके पुत्र श्रीनाथनारायण व्यास को तान–सागर की उपाधि दिये जाने का उल्लेख भी मिलता है। यह अनुमान किया जा सकता है कि नाथनारायण ने भी अपने पिता को ग्रन्थ संकलन व संपादन में सहयोग किया होगा।

कृष्णानंद व्यास को रागसागर की उपाधि मेवाड के महाराणाओं द्वारा दी गयी थी, ऐसा उल्लेख विश्वकोश के संपादक श्री नगेन्द्रनाथ बसु ने कलकत्ता से 1914 ई. में प्रकाशित रागसागर या रागकल्पद्रुम की भूमिका में किया है। परन्तु जयपुर महाराजा को लिखे गये उपर्युक्त पत्र में वल्लभ

Copyright@2022 Author(s) retain the copyright of this article
Homepage : ejournal@mfa.du.ac.in
Publisher : Department of Music, Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi
No part of contents of this paper may be reproduced or transmitted in any form or by any means without the permission of Author

कुल के अधिकारियों– गोस्वामियों द्वारा उन्हें स्वयं को रागसागर व उनके पुत्र को तानसागर की उपाधि का दिया जाना उल्लिखित है। यह उल्लेख श्री बसु के अनुमान को अप्रमाणिक सिद्ध करता है।

''श्रीनाथजी के श्रीवल्लभ कुल के अधिकारी सब गुंसाईयों ने रागसागर नाम दयो।''[5]

कृष्णानंद व्यास एक उत्तम कोटि के गायक थे, परन्तु वे मानधन अथवा पारिश्रमिक लेकर नहीं गाया करते थे। उनकी महफिल होने पर इनाम में दी गयी राशि ही वे स्वीकारते थे। सभी प्रकार की राग–रागिनियों को बिना एक–दूसरे के साथ मिलाये शुद्ध रुप में प्रस्तुत करने की उनमें असाधाारण योग्यता थी । उनके इस गुण की प्रशंसा करते हुए राजा राजेन्द्र लाल मित्र ने लिखा है[6]:–

His great pretention was, that he could sing in three octaves, the ordinary compass of the human voice, being two and a half octave. He pretended also that he could sing in all Ragas and Raginis, with absolute accuracy and without ever mixing up the latter. He was always singing but not a professional musician, that is, he never let himself on hire. He received presents from the rich people of the town frequently, but never accepted anything as wages and remuneration for singing.

'संगीतरागकल्पद्रुम' साहित्यिक व सांगीतिक, दोनों ही दृष्टियों से एक अमूल्य ग्रन्थ है। इतना ही नहीं हिन्दी साहित्य के आधारभूत ग्रन्थों शिवसिंह सरोज और मित्रबन्धु विनोद के संकलन में भी इस ग्रन्थ का अत्यधिक उपयोग किया गया है।

'संगीतरागकल्पद्रुम' को 'एनसाईक्लोपीडिया ऑफ इण्डियन म्यूजिक' कहा जाता है। कृष्णानंद जी को संस्कृत–हिन्दी के अलावा अनेक देशी विदेशी भाषाओं पर असाधारण अधिकार था, इसीलिये, इस एनसाईक्लोपीडिया में संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, कानडी, तेलुगु, तमिल, बंगाली, उडिया, अरबी, फारसी, फेगुअन तथा अंग्रेजी के अनेक रागबद्ध और तालबद्ध रचनाओं का संकलन किया जा सका है।

परन्तु यह ग्रन्थ केवल संकलन ही नहीं है। कृष्णानंद जी ने उपलब्ध संगीत शास्त्रीय भरत आदि के प्राचीन ग्रन्थों तथा 'इन्द्रप्रस्थ समुद्भव तानसेन' आदि के द्वारा गाई गई रचनाओं को अपने इस विशालकाय ग्रन्थ में विश्लेषित किया है। ग्रन्थ के मंगलाचरण में ही इस तथ्य को इन शब्दों मे स्पष्ट किया गया है।

देवी सरस्वतीं नत्वा गणेशं हरिमीश्वरम्।

Copyright@2022 Author(s) retain the copyright of this article
Homepage : ejournal@mfa.du.ac.in
Publisher : Department of Music, Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi

No part of contents of this paper may be reproduced or transmitted in any form or by any means without the permission of Author

रागकल्पद्रुमं ग्रन्थं कुरुते रागसागरः।।

पौत्रोऽहममरानंद–वेदव्यासव्दिजन्मनः।

पुत्रश्च हीरकानंद–वेदव्यासो नत्वा सरस्वतीम्।
रागकल्पद्रुमं नाम कुर्वे ग्रन्थं सतां मुदे ।।

देवी वाक्पतिमीश्वरम् गणपतिं नत्वा हरिं मारुतिं।
संगीतभरतेशमारुतिमतम् सम्यक् विचार्य्यादरात्।।

इन्द्रप्रस्थसमुद्भवृर्विरचितंयत्तानसेनादिभिः।
उक्त सत्प्रकरोमि नादनिलयं श्रीरागकल्पद्रुमम्।।7

ग्रन्थ में मंगलाचरणके पश्चात् स्वराध्याय–रागविवेकाध्याय में रागरागिनी समय, रागरागिनी ध्यान व उदाहरण की चर्चा करते हुए दूसरे तालाध्याय में प्रचलित और अप्रचलित तालों का छन्दोनुसारी विवेचन किया है। उदाहरण के लिये सूरफाक्ता का विवेचन देखिये।

लघुद्रुतो लघुश्चैव सूर्यफाक् सुसंज्ञकः
101 इति सूरफाक् तालः।[7]

गुरु लघु मात्राओं के अलावा अणु–लघु मात्राओं का भी प्रयोग किया गया है, जैसे गणेशताल में।

द्रुतद्वंद्वलौ चैव चतुराणु लघुस्तथा।
गणेशतालसंजातः संगीते परिभाषितः।।

00।। इति गणेशतालः।[8]

चतुर्थ नृत्याध्याय में नृत्य के भेद तथा रागांग–क्रियांग–भाषांग का विवेचन किया गया है। वाद्याध्याय के घनवाद्यों में मृदंग का ही विवेचन किया गया है। अन्तिम गानाध्याय में छः राग और छत्तीस रागिनियों के सिद्धान्त का पालन करते हुए (जो उनके समय में प्रचलित नहीं था) उन्होंने प्रत्येक राग में भिन्न–भिन्न तालों में हजारों रचनाओं को संकलित किया है।

यहां यह ध्यान देने की बात है कि व्यास जी ने हनुमत मत तथा अन्य मतों का हवाला देते हुए रागों के ध्यान तथा वर्णन का विवेचन किया है। परन्तु गानाध्याय में दी हुई रचनाओं में इस प्राचीन वर्गीकरण को उन्होंने स्वीकार नहीं किया है। राग–रागिनियों के समय में भैरवी–भैरव–रामकली को उन्होंने प्रातःकाल में ही रखा है, तो भटियार, भंखार, सिंधु, ललित और बसंत को दिन के प्रथम प्रहर में रखा है। बिलावल और लक्षशाख के प्रकारों को दिन के प्रथम याम में रखा है, तो सुघराई,

Copyright@2022 Author(s) retain the copyright of this article
Homepage : ejournal@mfa.du.ac.in
Publisher : Department of Music, Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi

No part of contents of this paper may be reproduced or transmitted in any form or by any means without the permission of Author

सुहा, सारंग, गांधार को द्वितीय व तृतीय प्रहर में गाना उचित समझा है।

तोडी के सभी प्रकारों के लिये दिन के द्वितीय प्रहर का पूर्वार्द्ध उपयुक्त माना गया है जबकि सारंग के सभी प्रकारों को उन्होंने मध्यान्ह में रखा है। धनाश्री और मुलतानी को दिन के तृतीय प्रहर में, तो श्री और गौरी के प्रकारों को संध्याकाल में रखा है। इसी प्रकार नट और कल्याण के प्रकार, बागेश्री, नायकी, केदार, रात्रि के द्वितीय याम में उचित माने गये हैं । शंकराभरण, बिहाग, देश और सिंदूरा को अर्द्ध रात्रि में तथा सोहनी, मालव–कौशिक, खंभावती को रात के तीसरे प्रहर के उपयुक्त माना है।[9]

झिंझोटी, जंगला, पीलु, तिलंग, लूहर, लूम, लहरी, गरबा, धवला, कजरी, साजगिरी, लावणी, जोगिया, अहंग जैसे रागों को उन्होंने उपराग मानते हुए, यथा

उपराग इति प्रोक्तो, देशे देशे तु विस्तरात्।
गानभेदोप्यनेकस्तु, नास्त्यन्तो गानवारिते।।

यह कहते हुए राग–विभाजन के प्रकरण को समाप्त किया है।[10]

गानाध्याय का प्रारंभ राग भैरव से किया है एवं भैरव राग का शास्त्रीय स्वरुप प्रस्तुत करने के बाद आलापचारी देते हुए, तानसेन के द्वारा गाये गये ध्रुवपदों से रचनाओं को प्रस्तुत करना प्रारंभ किया है।

सैकडों ध्रुवपदों की रचनाएं प्रस्तुत करने के बाद व्यासजी ने फिर अनेक ख्यालों की रचनाएं प्रस्तुत की हैं। इन रचनाओं में संस्कृत व हिन्दी की रचनाओं के अलावा अन्य सभी भाषाओं की रचनाएं हैं, यहां तक कि राग अहंग में अंग्रेजी की एक गजल को भी प्रस्तुत किया गया है।

संगस्टर स्वीट विगिन दी ले, एवर न्यू एण्ड एवर गे।
ब्रिंग द जांय इन्स्पायरिंग वाईन, एवर फ्रेश एण्ड एवर फाईन।।

'रागकल्पद्रुम' में समाविष्ट की जाने वाली इस प्रकार की विविध सामग्री की सूचना कृष्णानंद जी ने अपने सभी ग्रन्थ ग्राहकों को दी है। जयपुर महाराजा को लिखे उनके पत्र के संदर्भित अंश को पुनः यहां इसलिये उद्धृत किया जा रहा है, ताकि सम्पूर्ण ग्रन्थ की सामग्री का अनुमान किया जा सके।[11]

कृष्णानंद जी द्वारा दी गई रचनाओं मे पटताल अथवा पटतारा, धमार, बहार, डुवहर, वसंत–तिताला, सिंधु–तिताला, गांधार–तिताला, कसूर–तिताला, देशी–एकताल, आडा धीमा तिताला, लाचारी, तथा लाचारी–धमार, पांच फरोदस्त, जयतिश्री, चौराक चौताल, या जतफारसो, जैसे तालों के नाम

Copyright@2022 Author(s) retain the copyright of this article
Homepage : ejournal@mfa.du.ac.in
Publisher : Department of Music, Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi

No part of contents of this paper may be reproduced or transmitted in any form or by any means without the permission of Author

भी अब लोगों को ज्ञात नहीं है। कृष्णानंद जी को सावनी–बरवा, सिन्धु–मुलतानी, भैरवी बहार, मालव वांडी, के अलावा गांधार जैसे रागों में 100 से ऊपर बंदिशें प्राप्त हुई है।

बारह लाख पचीस हजार गान संग्रह की इस रचना में हिन्दुस्तानी, उर्दू, अरबी, ईरानी, फारसी, तुर्की, तुरानी, रुमी, सामी, खैबर, पश्तो, चीनी, नेपाली, नेवारी, तिरहुति, बाराभाटी, बांसवाडी, मारवाडी, शेखावाटी, प्राकृत, डिंगल, पिंगल में लिखने वाले कवियों की संकलित सामग्री का साहित्यिक मूल्य भी कुछ कम नहीं है।

सच पूछिये, जो जैसा कि, नगेन्द्र नाथ बसु ने कहा है कि नहीं जानते कि इतना बडा संगीत विषयक ग्रन्थ भारत की ही क्या, जगत् की किसी भाषा में है या नहीं।[12] मेवाड में जन्मे कृष्णानन्द जी व्यासदेव के इस अवदान से संगीत व साहित्य के अध्येताओं को जो आशीर्वाद प्राप्त हुआ है, उस का समग्र सर्वांगीण मूल्यांकन तो अनेक शोध–प्रबंधों के द्वारा ही किया जा सकेगा। यहां संगीत के इतिहास की दृष्टि से आवश्यक तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है। इस अवदान में मेवाड की भूमिका क्या रही, यह प्रश्न यद्यपि संदेह के घेरे में रहेगा, तथापि कृष्णानंद व्यास की जन्मभूमि मेवाड़ होने के कारण मेवाड़ की वाग्गेयकार परम्परा में उनका नाम हमेशा स्मरण किया जायेगा। उनका यह संकलन कार्य केवल कविताओं का संग्रह नहीं था, वरन् उन्होंने इन रचनाओं की स्वरलिपि का भी अंकन किया था, परन्तु मुद्रण व्यय की व्यवस्था न होने से स्वर–लिपि प्रकाशित नहीं की जा सकी। दरअसल कृष्णानंद जी के ही कार्य को भातखंडे जी ने उठाया परन्तु भातखंडे उस शिखर पर पहुंचे या नही इसका निर्णय आपको करना है ।

संदर्भ सूची

1) शर्मा, डॉ. प्रेमलता (सं.) 'एकलिंग माहात्यम्', परिशिष्ट, पृष्ठ 188 व 191, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली.

2) जावलिया, डॉ. ब्रजमोहन : लेख – कृष्णानंद व्यास की साहित्य व संगीतसेवा कलानुसंधान पत्रिका, पृष्ठ 9–11, सं. डॉ. मुरारी शर्मा, संगीत भारती, शोध विभाग, बीकानेर (राज)

3) वही

4) पोथीखाना संग्रह, जयपुर, ग्रंथ संख्या – 4806

5) मुनिकान्तिसागर संग्रह, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, चित्तौडगढ, ग्रंथ संख्या–995

6) जावलिया, डॉ. ब्रजमोहन : लेख – कृष्णानंद व्यास की साहित्य व संगीतसेवा कलानुसंधान पत्रिका, पृश्ठ संख्या 80, सं. डॉ. मुरारी शर्मा, संगीत भारती, शोध विभाग, बीकानेर (राज)

Copyright@2022 Author(s) retain the copyright of this article
Homepage : ejournal@mfa.du.ac.in
Publisher : Department of Music, Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi
No part of contents of this paper may be reproduced or transmitted in any form or by any means without the permission of Author

7) व्यास, पं. कृष्णानंद, 'संगीतरागकल्पद्रुम', मंगलाचरण (सं.) पृश्ठ 1 व 34, बसु, डॉ. नगेंद्रनाथ, बंगीय साहित्य परिषद–1914, अप्पर सर्क्युलर रोड, कलकत्ता

8) 'संगीतरागकल्पद्रुम' – तालाध्याय पृश्ठ संख्या 16

9) वही, रागविवेकाध्याय, पृश्ठ संख्या 17

10) वही, पृश्ठ संख्या 688

11) पोथीखाना संग्रह, जयपुर

12) व्यास, पं. कृष्णानंद, 'संगीतरागकल्पद्रुम', मंगलाचरण (सं.), बसु, डॉ. नगेंद्रनाथ, बंगीय साहित्य परिषद–1914, अप्पर सर्क्युलर रोड, कलकत्ता, द्रष्टव्य–भूमिका